IMPACT OF FIRST WORLD WAR

FOR U.G.PART-2,PAPER-4

BY:ARUN KUMAR RAI
ASST.PROFESSOR
MAHARAJA COLLEGE
ARA.

भूमिका

सन 1914-18 के मध्य युद्ध को प्रथम विश्वयुद्ध की संज्ञा दी गई है इसका सूत्रपात यूरोप में हुआ और यह युद्ध मुख्य रूप से यूरोप महाद्वीप में लड़ा गया किंतु विश्व के समस्त महाद्वीप इस युद्ध में सम्मिलितथे। इस युद्ध में ब्रिटिश साम्राज्य के विभिन्न भागों के साथ-साथयूरोप ,एशिया एवं अमेरिका महाद्वीप के अनेक देशों ने भाग लिया था पहली बार विश्व की समस्त महान शक्तियां इस युद्ध में व्यस्त थी।

भूमिका

प्रथम विश्वयुद्ध पूर्व के सभी युद्धों में अधिक भयंकर एवं विनाशकारी साबित हुआ इसमें जन् धन की जो हानि हुई वह तो विस्मयकारी थी ही इसने एक साथ कई साम्राज्य और राजवंशों को ध्वस्त कर दिया इसके कई ऐतिहासिक परिणाम भी निकले जिनका महत्व अत्यंत दूरगामी था।

प्रथम विश्व युद्ध के परिणाम

- प्रथम महायुद्ध में 36 राष्ट्र शामिल थे।विभिन्न अनुमानों के अनुसार 5 करोड़ 30 लाख से लेकर 7 करोड़ तक लोग इस युद्ध में लड़े। इसमें मरने वालों की संख्या लगभग एक करोड़ बताई जाती है जो 1790 -1913 ईस्वी तक के संसार के विभिन्न भागों में होने वाले प्रमुख युद्ध में मरने वालों की संख्या से लगभग दुगनी से अधिक थी। लाखों लोग अपंग हो गए हवाई हमलों अकाल और महामारी की चपेट में भारी संख्या में सैनिक नागरिक भी मारे गए

आर्थिक परिणाम

- संपत्ति के विनाश के दृष्टि से भी यह अभूतपूर्व था युद्धरतसभी पक्षों को लगभग 18करोड़60लाख डॉलर खर्च करने पड़े इसके अतिरिक्त युद्ध में लगभग 39अरबडॉलरमूल्य की संपत्ति नष्ट हुई। कुल मिलाकर विभिन्न राष्ट्रों को 337 करोड डॉलर का आर्थिक बोझ उठाना पड़ा। लगभग सभी सरकारों को अपनी वित्तीय स्थिति को नियंत्रित करने के लिए अधिकाधिक संख्या में नोट छापने पड़े जिसके फलस्वरूप मुद्रास्फीति की संकट पैदा हुई ।

आर्थिक परिणाम

सैन्य गतिविधियों को सहायता देने वाली उत्पादक गतिविधियों के अतिरिक्त अन्य समस्त उत्पादक गतिविधियां समाप्त हो गई । व्यापार वाणिज्य को धक्का लगा। ऐसी स्थिति में सभी राज्य अपने अत्यंत बढें हुए खर्चों की पूर्ति हेतु कर्ज लेने को मजबूर थे । वित्तीय क्षेत्र में स्थाई परिवर्तन हुआ और संपत्ति का केंद्र यूरोप से उ.अमेरिका स्थानांतरित हो गया अमेरिका सबसे बड़ा महाजन देश के रूप में उभरा ।

राजनीतिक परिणाम

- प्रथम विश्वयुद्ध का सबसे प्रत्यक्ष राजनीतिक परिणाम निरंकुशता की समाप्ति एवं गणतंत्र की स्थापना था ।इसने यूरोप का नक्शा ही बदल कर रख दिया। यह युद्ध प्रमुखतःसाम्राज्य विस्तार के लिए हुआ था पर इसका परिणाम ठीक उलटा हुआ। तीन शासक वंश समाप्त हो गए ।युद्ध के दौरान हुए क्रांति के फलस्वरूप रुस में रोमनोव शासन नष्ट हो गया।

राजनीतिक परिणाम

उसी प्रकार जर्मनी में होहेनजोर्लन और ऑस्ट्रिया -हंगरी में हेब्सबर्ग शासक वंश समाप्त हो गए। युद्ध के कुछ समय बाद ही तुर्की में उस्मानिया वंश का शासन समाप्त हो गया ।कई नए देशों का निर्माण हुआ। ऑस्ट्रिया एंव हंगरी दो अलग अलग राज्य बने ।चेकोस्लोवाकिया और युगोस्लाविया स्वतंत्र देश के रूप में उभरा।

यूरोपीय प्रभुत्व की समाप्ति

- प्रथम महायुद्ध विश्व राजनीति में यूरोपीय प्रभुत्व की समाप्ति का सूचक था ।संयुक्त राज्य अमेरिका युद्ध के बाद एक विश्व शक्ति बनकर उभरा व आर्थिक तथा सैन्य दृष्टि से यूरोप को काफी पीछे छोड़ गया। युद्धोत्तर काल में संसार का सबसे महान व्यक्ति कोई यूरोपीय राजनेता नहीं बल्कि अमेरिका का राष्ट्रपति वुडरो विल्सन था जिसकी खुशामद में विजित और विजेता दोनों लगे थे।

यूरोपीय प्रभुत्व की समाप्ति

गैर यूरोपीय महादेशों के राजनेताओं की जो भूमिका पेरिस शांति सम्मेलन में रही वह भी विश्व राजनीति में घटते यूरोपीय वर्चस्व की पुष्टि करते है।

राष्ट्र संघ की स्थापना

- युद्ध काल में अंतरराष्ट्रीय सहयोग का महत्व स्पष्ट हुआ था। इतिहास ने सबक दिया था कि होली एलायंस और यूरोपीय व्यवस्था जैसा सहयोग कारगर नहीं होता इसलिए व्यापक स्तर पर सहयोग की शुरुआत हुई और अमेरिका के राष्ट्रपति वुड्रो विल्सन की प्रेरणा और पहल से राष्ट्र संघ की स्थापना अंतर्राष्ट्रीय शांति एवं सुरक्षा को बनाए रखने के उद्देश्य से हुई ।

राष्ट्र संघ की स्थापना

अपनी मूलभूत त्रुटियों की वजह से यह प्राथमिक उद्देश्य के निर्वहन में असफल रहा किंतु 20 वर्षों में इसनेअनेक आर्थिक एवं मानवीय कार्यों के संपादन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

रूस में समाजवादी व्यवस्था की स्थापना

- प्रथम महायुद्ध का एक अन्य महत्वपूर्ण परिणाम बोल्शेविक क्रांति के फलस्वरूप में रुसमें नए आर्थिक -सामाजिक- राजनीतिक ढांचे की स्थापना था ।रुसी समाजवादी व्यवस्था ने पहली बार समाज में मूलभूत परिवर्तन से शोषण पर आधारित समाज को समाप्त कर दिया ।अब दुनिया के सामने एक नया विकल्प था ।धीरे-धीरे दुनिया में समाजवादी आंदोलन बढ़ने लगा और दुनिया की राजनीति में पूंजीवादी साम्राज्यवादी शक्तियों का एकाधिकार समाप्त होने लगा ।दुनिया के शोषित प्रताड़ित देशों में रूसी क्रांति ने उम्मीद की नई किरण पैदा की।

स्वाधीनता आंदोलन को बल

- महायुद्ध के पश्चात एशिया, अफ्रीका और लातिन अमेरिका का स्वाधीनता आंदोलन ताकतवर बना। यूरोप के कमजोर होने तथा सोवियत संघ के उदय और उसके द्वारा राष्ट्रीय स्वाधीनता संघर्ष के समर्थन की घोषणा से इन संघर्षों की शक्ति बढ़ी। ।युद्ध में प्रजातंत्र की रक्षा का नारा दिया गया था और प्रजातंत्र विजयीभी हुआ लेकिन पश्चिमी प्रजातांत्रिक देशों का खोखलापन तब स्पष्ट होने लगा जब उन्होंने अपने उपनिवेश आजाद नहीं किए और उनका शोषण कायम रहा।

स्वाधीनता आंदोलन को बल

विश्व युद्ध में मित्र राष्ट्र की ओर से एशियाई एवं अफ्रीकी सैनिकों की भागीदारी एवं मिलने वाले विजयों से इनका मनोबल बढ़ा साथ ही' यूरोपीय श्रेष्ठता' जैसे मिथक को काफी धक्का लगा फल स्वरुप उपनिवेशों में राष्ट्रवादी आंदोलन को काफी बल मिला ।कुछ देशों में तो राष्ट्रवाद की पहली हलचल युद्ध के बाद महसूस की जाने लगी।

महिलाओं की मुक्ति का मार्ग प्रशस्त

- प्रथम महायुद्ध ने महिलाओं की मुक्ति का मार्ग प्रशस्त किया युद्ध काल की मजबूरी ने उनको रसोई से निकालकर कल कारखानों और दफ्तरों में पहूँचा दिया था ।इससे नारी स्वतंत्रता आंदोलन को बहुत बल मिला। धीरे-धीरे वे अपने राजनीतिक अधिकारों के प्रति सजग हुए और पुरुषों के बराबर स्थान की मांग करने लगे ।1918 में पहली बार ग्रेट ब्रिटेन में औरतों को मताधिकार मिला ।1917 में रूस तथा1920में जर्मनी ने भी यह अधिकार औरतों को प्रदान किए ।वीमेन लिव आंदोलन की वास्तविक पृष्ठभूमि प्रथम माह युद्ध के दौरान ही बनी थी।

वैज्ञानिक प्रगति को बढ़ावा

- महायुद्ध एंव युद्धोतर कालीन परिस्थितियों ने वैज्ञानिक प्रगति को बढ़ावा दिया ।युद्ध की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए वैज्ञानिकों ने नए -नए अविष्कार किए ।विद्युत का आविष्कार हुआ ।युद्ध में ब्रिटेन ने पहली बार टैंकों का प्रयोग किया। जर्मनी में बड़े पैमाने पर यू -बोट नामक पनडुब्बियों का इस्तेमाल हुआ। इसके अलावे वायुयानों एंव जहरीली गैसों का भी इस्तेमाल इस युद्ध में हुआ।

एक और महायुद्ध..।।

- यह विश्वास था कि प्रथम विश्वयुद्ध भविष्य में युद्ध की सारी संभावनाएं समाप्त कर देगा किंतु युद्ध उपरांत के शांति संधियों से उपजे असंतोष ने मार्शल फॉच के इस भविष्यवाणी को सत्य साबित करते हुए कि .....यह मात्र 20 वर्षीय विराम संधि है' विश्व को एक और महायुद्ध के कगार पर ला खड़ा किया।

Thanks!